AUTUMN BREAK HOLIDAY HOMEWORK

CLASS -VII HIGHER HINDI

१ भारत की महानता कैसी है ?

२ हमारी भाषा कैसी है ?

३ देश हमारा कैसा है ?

४ भारत देश की बिशेषता क्या है ?

५ पावन धारा से आप क्या समझते हो ?

६ सदा हम किसको अपनाते ?

७ शब्द के अर्थ लिखो ----

प्यारा -

अनोखी -

परिवेश -

न्यारा --

विशेष -

मेलजोल -

८ हमारे देश की अनोखी सुंदरता के बारें में आप क्या जानते हैं लिखिए ?

५

ODM EDUCATIONAL GROUP Changing your Tomorrow

९ आप को अपना देश क्यों अच्छा लगता है ?

१० विविधता में एकता इससे आप क्या समझते हो ?

११ कविता का सारांश अपने भाषा में लिखिए ?

१२ निम्न लिखित शब्दों से वाक्य बनाओ ---

अलग -

भारत -

मेलजोल -

धर्म -

जाहीर -

१३ निम्न लिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

एक शिष्य अपने गुरु के समीप जाकर संवाद करने लगा संवाद करते- करते वह भूल गया कि वह किससे वार्तालाप कर रहा है और बातों ही बात में अपने गुरु जी को कुछ अपशब्द कह दिया।जब उसे ज्ञात हुआ कि वह अपने गुरु जी से संवाद कर रहा है तो उसने अपने गुरु जी के चरणों में अपना शीश को समर्पित करते हुए कहा कि- हे उस्ताद! मैंने बहुत बड़ा अपराध किया है और आप मुझे कोई दंड दें ताकि वह बात पार्श्व (वापस) हो जाए। तब गुरु जी ने उस शिष्य के सिर पर अपना हाथ को सहलाते हुए बोले की पुत्र बोले हुए कथन कभी पार्श्व नहीं होते।जिस प्रकार जब बाण धनुष का परित्याग कर देता है। उसके पश्चात् पार्श्व नहीं होता ठीक उसी प्रकार यह कथन भी होता है। इसे भी अपने मुख रूपी धनुष का परित्याग कर देने के पश्चात् यह भी पार्श्व नहीं होता। मैं तुम्हें एक और

उदाहरण देते हुए बताता हूं कि तुम्हें स्पष्ट रूप से समझ आ जाए। जिस प्रकार बाल्य काल को छोड़कर हम लोग अपने युवा अवस्था को प्राप्त कर लेते हैं तो पुनः बाल्य काल में प्रवेश करना मुमकिन नहीं होता ठीक उसी प्रकार से ये कथन होते हैं। फिर भी शिष्य उस उत्तर से संतुष्ट नहीं हुआ था। तभी गुरुदेव ने एक और उदाहरण देते हुए बोले की जिस प्रकार तरु(वृक्ष) से वरक(पत्ता) का टूट कर गिरने के पश्चात् वह वरक तरु में नहीं लग सकता। ठीक उसी प्रकार से शिष्य कोई भी कथन मुख से निकलने के पश्चात् उसका पार्श्व होना मुमकिन नहीं होता। अब शिष्य पूरी तरह से इस बात से गुरु जी के इस उदाहरण से संतुष्ट हो चुका था। सीख :- इस कहानी से हमें यह शिक्षा प्राप्त होती है कि हमें कोई भी बातों को दूसरे के समक्ष प्रकट करने से पहले सोच विचार करके ही उस बात को कहना उचित माना गया है और ये स्वयं के लिए भी लाभप्रद होता है। तभी गुरुदेव ने एक और उदाहरण देते हुए बोले की जिस प्रकार तरु(वृक्ष) से वरक(पत्ता) का टूट कर गिरने के पश्चात् वह वरक तरु में नहीं लग सकता। ठीक उसी प्रकार से शिष्य कोई भी कथन मुख से निकलने के पश्चात् उसका पार्श्व होना मुमकिन नहीं होता। अब शिष्य पूरी तरह से इस बात से गुरु जी के इस उदाहरण से संतुष्ट हो चुका था।सीख :- इस कहानी से हमें यह शिक्षा प्राप्त होती है कि हमें कोई भी बातों को दूसरे के समक्ष प्रकट करने से पहले सोच विचार करके ही उस बात को कहना उचित माना गया है और ये स्वयं के लिए भी लाभप्रद होता है।

(प्रश्न) -

क. दिए गए प्रश्न में से सही और गलत का चयन करें:-

हमे अपने गुरु का आदर करना चाहिए।

हमारे मुख से निकले शब्द वापिस हो सकते है।

ख. विलोम शब्द बतावें:-

आदर

गुरु

ग. पर्यायवाची शब्द लिखें:-

गुरु

मुख

१४ -काकी पाठ का मूल उद्देश्य क्या है ?

१५ -कौन अपनी काकी को वापस लाना चाहता था और क्यों ?

१६-काकी पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए ।

१७ -पेड़ न हो तो क्या होता?

१८-जंगल के जानवर क्यों परेशान थे ?

१९ -राजा का चिंता को कौन दूर किया ?

२० अनुच्छेद लिखिए -

मेरी पहली रैलयात्रा

अथवा

मेरा प्रिय टीवी सीरीअल

२१-मित्र के जन्म दिन पर उपस्तीत न होने के कारण क्षमा याचना करते हुए मित्र के पास पत्र लिखिए ।

२२-बढ़ती मंहगाई से परेशान दो मित्रों के मध्य वार्तालाप को संबाद के रूप में प्रस्तुत कीजिए

२३ -कौन अपनी बचपन को बार बार पुकार रही थी और क्यों ?

२४ -मेरा नया बचपन कविता का सारांश को अपने शब्दों में लिखिए ।

ODM EDUCATIONAL GROUP Changing your Tomorrow

२५ -सच्चा मित्र किसे कहते हैं ?

२६ किसे दुगनी खुशी मिली और क्यों ?

२८-दुगनी खुशी पाठ के माध्यम से लेखक समाज को क्या संदेश देना चाहते हैं ?

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow